भाग – 4

अध्याय 13

गुरबाणी में 'कृपाल'

धूड़ी मजनु साध खे साई थीए **कृपाल** ।।
लधे हभे थोकड़े नानकु हरि धनु माल ।। (पृ. 80, म:5)
अमृत हरि पीवते सदा थिरु थीवते, बिखै बनु फीका जानिआ ।।
भए **किरपाल** गोपाल प्रभ मेरे साध संगति निधि मानिआ ।।
(पृ. 81, म:5)

सतिगुरु दइआल **किरपाल** भेटत, हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ।।
कथनु न जाइ अकथु स्वामी, सदकै जाइ नानकु वारिआ ।।
(पृ.ा 81, म:4)

संतन मौकउ हरि मारगि पाइआ ।।
साध **कृपालि** हरि संगि गिझाइआ ।। (पृ. 100, म:5)
दुइ कर जोड़ि इक बिनउ करीजै।। करि किरपा डुबदा पथरु लीजै।।
नानक कउ प्रभु भए **कृपाला** प्रभु नानक मनि भाणा जीउ ।।
(पृ. 103, म:5)

दइया धारी तिनि सिरजनहारे ।। जीअ जंत सगले प्रतिपारे ।।
मिहरवान **किरपाल** दइआला सगले त्रिपति अघाए जीउ ।।
(पृ. 103, म:5)

अनद मंगल कलिआन निधाना ।। सूख सहज हरि नामु वखाना ।।
होइ **कृपालु** सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ।।
(पृ. 104, म:5)

भए **कृपाल** गोबिंद गुसाई ।। मेघु वरसै सभनी थाई ।।
दीन दइआल सदा **किरपाला**।। ठाढि पाई करतारे जीउ ।।(पृ. 105, म:5)

तू दइआलु **किरपालु** प्रभु सोई ।। तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ।।
गुरु प्रसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिया ।।
(पृ. 129 – 130, म:4)

हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु **कृपालु** होइ प्रभु देई ।।
जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ।।
(पृ. 165, म:4)

राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ।।
गुर **कृपालि** कृपा किंचत गुरि कीनी, हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी।।
(पृ. 170, म:4)

जिसु जन होए आपि **कृपाल** ।। नानक सतिगुर सदा दइआल ।।
(पृ. 177, म:5)

कहु नानक जिसु भए **कृपाल** ।। गुरि पूरै ता के काटे जाल ।।
(पृ. 180, म:4)

सो जागै जिसु प्रभु **किरपालु** ।। इह पूंजी साबतु धनु मालु ।।
(पृ. 182, म:5)

साध **कृपाल** दइआल गोविंदु ।। साधा महि इह हमरी जिंदु ।।
किरपा निधि **किरपाल** धिआवउ ।। साध संगि ता बैठणु पावउ ।।
(पृ. 183, म:5)

कहु नानक जा कउ होहु **कृपाल** ।।
तिसु जन की सभ पूरन घाल ।। (पृ. 183, म:5)
अनद भये गुर मिलत **कृपाल** ।। करि किरपा काटे जम जाल ।।
(पृ. 190, म:5)

अंतरि साचि नामि रसि राता ।।
नानक तिसु **किरपाल** बिधाता ।। (पृ. 194, म:5)
जा कउ भये **कृपाल** गुसाई ।।
से जन लागे गुर की पाई ।। (पृ. 194, म:5)
जप तप संजम पूरी वडिआई ।।
गुर **किरपाल** हरि भए सहाई ।। (पृ. 196, म:5)
सतिगुरु भेटिउ सदा **कृपाल** ।।
हरि सिमरि सिमरि काटिया भउ काल ।। (पृ. 200, म:5)
सतिगुरु पूरा भइआ **कृपालु** ।।
हिरदै वसिया सदा गुपालु ।। (पृ. 200, म:5)
खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसनि कउ हउ फिरत तिसाई ।।
दीन दइआल **कृपाल** प्रभ नानक साध संगि मेरी जलनि बुझाई ।।
(पृ. 204, म:5)
ता कै चरणि परउ ता जीवा, जन कै संगि निहाला ।।
भगतन की रेणु होइ मनु मेरा होहु प्रभू **किरपाला** ।।(पृ. 207, म:5)
अंह बुधि करम कमावने।। गृह बालू नीरि बहावने ।।
प्रभु **कृपालु** किरपा करै।। नामु नानक साधू संगि मिलै ।।(पृ.211)
जउ होइ **कृपाल** त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाए ।।
मुकतु भइआ बंधन गुरि खोले जन नानक हरि गुन गाए ।।(पृ. 213)
गुरि **किरपालि** कृपा प्रभि धारी, बिनसे सरब अदेसा ।।
नानक सुखु पाइया हरि कीरतनि, मिटिओ मंगल कलेसा ।।((पृ. 213)
जउ लउ हउ किछु सोचउ जितवउ तउ लउ दुखनु भरे ।।
जउ **कृपाल** गुरु पूरा भेटिआ, तउ आनंद सहजे ।। (पृ. 214)
भये **कृपाल** स्वामी मेरे जीउ ।।
पतित पवित लगि गुर के पैरे जीउ ।। (पृ. 216 – 217, म:5)

भये **कृपाल** गुसाईया नठे सोग संताप ।।
तती वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ।। (पृ. – 218)
जा कउ भये **कृपाल** कृपा निधि ।।
तिसु भई खलासी होई सगल सिधि ।। (पृ. – 238)
जिसु भइया **कृपालु,** तिसु सतसंगि मिलाइआ ।।
कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ।। (पृ. – 239)
अनाथह नाथ **कृपाल** दीन संमृथ संत उटाइओ ।।
निरगुनीआरे की बेनती, देहु दरसु हरि राइओ ।। (पृ. – 241)
खेलहि बिगसहि अनद सिउ, जा कउ होत **कृपाल** ।।
सदीव गनी सुहावने, राम नाम गृहि माल ।। (पृ. – 253)
टहल महल ता कउ मिलै, जा कउ साध **कृपाल** ।।
साधू संगति तउ बसै, जउ आपन होहि दइआल ।। (पृ. – 255)
हित करि नाम दृड़ै दइआला ।। संतह संगि होत **कृपाला** ।।(पृ. 260 – 61)
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ।। सभ ऊपरि होवत किरपाल ।।
(पृ. 274)
आपे मेलि लए किरपाल ।। गुर का शब्द जपि भये निहाल ।।
पूरन पूरि रहे दइआल ।। सभ ऊपरि होवत **कृपाल** ।। (पृ. – 292)
गोपाल दमोदर दीन दइआल ।। दुख भंजन पूरन **कृपाल** ।।(पृ. – 295)
दुरमति हरी सेवा करी भेटे साध **कृपाल** ।।
नानक प्रभ सिउ मिलि रहे बिनसे सगल जंजाल ।।(पृ. 299)
प्रभु होइ **कृपालु** त इहु मनु लाई ।।
सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ।। (पृ. – 375, म: 5)
गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ ।। गुरु **किरपालु** होइ दुखु जाइ ।।
(पृ. – 387)
भए **कृपाल** गुपाल गोबिंद ।। साध संगि नानक बखसिंद ।। (पृ. – 391)

गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऐ ।।
होइ **कृपालु** दइआलु हरि रंग माणीऐ ।। (पृ.-399, म: 5)

दृसटि तेरी सुखु पाईऐ, मन माहि निधाना ।।
जा कउ तुम **किरपाल** भये, सेवक से परवाना ।। (पृ.-400)

भइयो **कृपालु** दइआलु प्रभु, ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ।।
कहु नानक जउ साध संगु पाइओ, तउ फिरि जनमि न आवउ।।
(पृ.-401)

दीन दइआल **कृपाल** प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ ।।
नानक आहि सरण प्रभ आइओ राख लाज अपनाइआ ।।(पृ.-402)

जउ भइओ **कृपालु** दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ।।
कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ।।(पृ.-403)

इउ जपिओ भाई पुरखु बिपाते ।।
भइओ **कृपालु** दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ।। (पृ.-403)

अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मस्तकि भागु ।।
आपि **कृपालि** कृपा प्रभि धारी सतिगुरु बखसिया हरिनामु ।।(पृ.-406)

हरि तजि अन लगे हां।। जनमहि मरि भगे हां ।।
हरि हरि जनि लहे हां।। जीवत से रहे हां ।।
जिसहि **कृपालु** होइ हां ।। (पृ.-411)

आपि **कृपालु** कृपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ।।
जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नाम समाइआ ।। (पृ.-494)

सहज सुभाइ भये **किरपाला** तिसु जन की काटी फास ।।
कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ।।(पृ.-496, म:5)

भये **कृपाल** दइआल गुपाला ता निरभै कै घर आइआ ।।
कलि कलेस मिटे खिन भीतरि नानक सहजि समाइआ ।।(पृ.-496)

हरि जपि माइआ बंधन तूटे ।।
भए **कृपाल** दइआल प्रभ मेरे साध संगति मिलि छूटे ।। (पृ.-497)

करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ।।
गोबिंद दइआल **कृपाल** सुख सागर नानक हरि सरणाइओ ।।(पृ.-501)

नाथ नरहर दीन बंधव पतित पावन देव ।।
भै त्रास नास **कृपाल** गुणनिधि सफल सुआमी सेव ।। (पृ.-508)

जा कउ भए **कृपाल** प्रभ हरि हरि सेई जपात ।।
नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत संगात ।।(पृ.-521, म:5)

अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ।।
जिस नो होहि **कृपालु** सु नामु धिआईऐ।। (पृ.-521)

जिस नो होइ **कृपालु** तिस का दूखु जाइ ।।
भगत तेरे दइआल ओहना मिहर पाइ ।। (पृ.-521-22)

जिस होआ आपु **कृपालु** सु नह भरमाइआ ।।
जो जो दिता खसमि सोई सुख पाइआ ।। (पृ.-523)

माई गुरचरणी चितु लाईऐ ।।
प्रभु होइ **कृपालु** कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ।। (पृ.-528)

सुख आइओ भै भरमु बिनासे, कृपाल हुए प्रभ जबहू ।।
कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ, साध संगि तजि लबहूं ।। (पृ.-529)

सफल मूरत परसउं संतन की इहै धिआना धरना ।।
भइउ **कृपालु** ठाकुरु नानक कउ, परिओ साध की सरना ।।(पृ.-531)

अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ।।
भये **कृपाल** दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ।।
(पृ.-533)

मागउ दानु **कृपाल** कृपानिधि, मेरा मुखु साकत संगि न जुटसी रे ।।
जन नानक दास दास को करीअहु, मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ।।
(पृ.-535-36)

मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा, क्या को पूज चढ़ावए ।।
जिसु होइ **कृपालु** दइआलु सुआमी, सो प्रभ अंकि समावए ।।
(पृ. - 542)

जिसको **कृपाल** होवै हरि आपे तिस नो हुकम मनावै।।
जा आपि **कृपालु** होवै हरि सुआमी ता आपणां नाओ हरि आपि जपावै ।।
(पृ. - 555)

विसरु नाही प्रभ दीन दइआला।। तेरी सरणि पूरन **किरपाला**।।(पृ. - 563)

उपदेसु सुणि साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ।।
जिन कउ **कृपालु** होआ प्रभु मेरा, से लागे गुर की बाणी ।।(पृ. - 608)

वडै भागि रतन जनमु पाइआ, करहु कृपा **किरपाला** ।।
साध संगि नानकु गुण गावै, सिमरै सदा गुपाला ।। (पृ. - 611)

दीन दइआल **कृपाल** सुख सागर, सरब घटा भरपूरी रे ।।
पेखत सुनत सदा है संगे, मै मूर्ख जानिआ दूरी रे ।।(पृ. - 612)

गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे, जिनि जिनि दरसनु पाइआ ।।
भइओ **कृपालु** नानक प्रभु अपना, अनद सेती घरि आइआ ।।
(पृ. - 615)

भए **कृपाल** गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाए ।।
असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ।।(पृ. - 618, म: 5)

भए **कृपाल** पूरन अबिनाशी आपहि कीनी सार ।।
पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ।। (पृ. - 618)

गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ।।
भये **कृपाल** पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ।।(पृ. - 618)

घर महि सुख बाहरि फुनि सूखा, प्रभ अपुने भए दइआला ।।
नानक बिघनु न लागै कोऊ, मेरा प्रभु होआ **कृपाला** ।। (पृ. - 619)

भये **कृपाल** सुआमी मेरे, तितु साचै दरबारि ।।
सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठांढि पई संसार ।। (पृ. - 620)

भइओ **किरपालु** सरब को ठाकुरु सगरो दुख मिटाइओ ।।
कहु नानक हउमैं भीति गुरि खोई, तउ दइआरु बीठलो पाइओ ।।
(पृ. - 624)

होइ दइआलु **किरपाल** प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ।।
पूरा सतिगुरु मेलि मिलावै सभ चूके मन की चिंती ।। (पृ. - 625)

सिमरि सिमरि दइआला।। सभि जीअ भए **किरपाला** ।। (पृ. - 625)

मेरा प्रभु होआ सदा दइआला ।।
अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ **किरपाला** ।।
(पृ. - 627)

भइओ **किरपालु** दीन दुख भंजनु, आपे सभ बिधि बाटी ।।
खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ।।(पृ. - 630)

अपने गुर उपरि कुरबानु ।।
भए **किरपाल** पूरन प्रभ दाते, जीअ होए मिहरवान ।। (पृ. - 631)

संतन के कारज सगल सवारे ।।
दीन दइआल **कृपाल** कृपा निधि, पूरन खसम हमारे ।। (पृ. - 631)

तेरो सेवकु इह रंगि माता ।।
भइओ **कृपालु** दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इह मन राता ।।
(पृ. - 642)

कुड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ।।
जिसु हरि होए **कृपालु** सो नामु धिआवई ।। (पृ. - 646)

दीन दैआल सदा **किरपाला** सरब जीआ प्रतिपाला ।।
ओति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गुपाला ।।(पृ. - 672)

तुम दइआल **किरपाल** कृपानिधि, पतित पावन गोसाई ।।
कोटि सूख आनंद राज पाए, मुख ते निमख बुलाई ।। (पृ. - 673)

प्रभ दइआल **कृपाल** हजूरि ।। नानक जीवै संता धूरि ।। (पृ. - 676)

निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक, मात दूधु जैसे बाले ।।
सागर महि बोहिथु पाइओ हरि नानक, करी कृपा **किरपाले** ।।
(पृ.-679)

भए **कृपाल** दइआल गोबिंदा, अमृतु रिदै सिंचाई ।।
नवनिधि रिधि सिधि हरि, लागि हरि जन पाई ।। (पृ.-679)

संत **कृपाल** दइआल दमोदर, काम क्रोध बिखु जारे ।।
राजु मालु जोबनु तनु जीअरा, इन ऊपरि लै बारे ।। (पृ.-680)

दइआल सदा **कृपाल** सुआमी, नीच थापणहारिआ ।।
जीअ जंत सभि वसि तेरै, सगल तेरी सारिआ ।। (पृ.-691)

मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ।।
हरि हरि **कृपालि** कृपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ।।
(पृ.-697)

कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ।।
जिसु होइ **कृपालु** सोई सिधि बूझै ता की निर्मल रीति ।।(पृ.-700)

धंनु धंनु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे ।।
गुर **कृपाल** जब भए, त अवगुण सभि छपे ।।(पृ.-710,म:5)

खिनु रहनु न पावउ बिनु पग पागे ।।
होइ **कृपाल** प्रभ मिलह सभागे ।। (पृ.-737)

तूं दइआलु **कृपालु** कृपानिधि, मनसा पूरणहारा ।।
भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम, तू भगतन दा पिआरा ।।(पृ.-747)

अंध कूप ते काढि लीए तुम, आपि भए **किरपाला** ।।
सारि समालि सरब सुख दीए, आपि करे प्रतिपाला ।। (पृ.-748)

कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी, जितु तुमरै दुआरै आइआ ।।
नानक कउ प्रभ भए **कृपाला**, सतिगुरु पूरा पाइआ ।। (पृ.-749)

दीन दइआल **कृपाल** प्रभ सुआमी, तेरी सरणि दइआला ।।
करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ।।(पृ.-750)

भइओ **कृपाल** साध संगु पाइआ ।।
नानक त्रिपते पूरा पाइआ ।। (पृ.-759)

सहज सुभाए भए **किरपाला**, गुण अवगण न बीचारिआ ।।
कंठि लगाइ लीए जन अपुने राम नाम उरि धारिआ ।।(पृ.-782)

पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ।।
जा होए **कृपालु** ता प्रभू मिलाए ।। (पृ.-794)

सगल सीगार करे नही पावै ।।
जा होइ **कृपालु** ता गुरू मिलावै ।। (पृ. 801)

प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी, जीउ पिंडु सभु तुमरा माल ।।
भ्रम के बंधन काटहु परमेसर, नानक के प्रभ सदा **कृपाल** ।।(पृ.-806)

सगल अनंदु कीआ परमेसरि, अपणा बिरद समारिआ ।।
साध जना होए **किरपाला**, बिगसे सभ परवारिआ ।।(पृ.-806)

चरन पखारउ करि सेवा, जे ठाकुर भावै ।।
होहु **कृपाल** दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ।।(पृ.-809)

तुम मिलते मेरा मनु जीओ, तुम मिलहु दइआल ।।
निसि बासुर मनि अनदु होत, चितवत **किरपाल** ।। (पृ.-810-11)

बंधन काटे आपि प्रभि होआ **किरपाल** ।।
दीन दइआल प्रभ पारब्रह्म ता की नदरि निहाल ।।(पृ.-814,म:5)

अरदासि सुणी दातारि प्रभि होए **कृपाल** ।।
राखि लीआ अपना सेवको मुखि निंदक छारु ।।(पृ.-818,म:5)

गुरु पूरा आराधिआ, होए **किरपाल** ।।
मारगु संति बताइआ, तूटे जम जाल ।। (पृ.-819,म:5)

रसना अगह अगह गुन राती, नैन दरस रंगु लाए ।।
होहु **कृपाल** दीन दुख भंजन, मोहि चरण रिदै वसाए ।।(पृ.-820,म:5)

हमरो सुहाउ सदा सद भूलन तुमरो बिरदु पतित उधरन।।
करुणामै **किरपाल** कृपानिधि जीवन पद नानक हरि दरसन।।(पृ.-828)

जिउ भावै तिउ मोहि प्रतिपाल ।।
पारब्रह्म परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम पिता **किरपाल**।। (पृ.-828)

अविगतो हरि नाथु नाथह, तिसै भावै सो थीऐ ।।
किरपालु सदा दइआलु दाता, जीआ अंदरि तूं जीऐ ।।(पृ.-843,म:5)

हरि सेवे की ऐसी वडिआई देखहु हरि संतहु जिनि
विचहु काइया नगरी दुसमन दूत सभ मारि कढीए ।।
हरि हरि **किरपालु** होआ भगत जना उपरि
हरि आपणी **किरपा** करि हरि आपि राखि लीए ।। (पृ.-851,म:5)

पारब्रहम जब भए **किरपाल** ।।
तब भेटे गुर साध दइआल ।। (पृ.-863)

अछल अछेद अभेद दइआल।।
दीन दइआल सदा **किरपाल** ।। (पृ.-868-69, म:5)

हम तिस का बहु जानिआ भेउ ।।
जब हूए **किरपाल** मिले गुरदेउ ।। (पृ.-871, म:5)

जिस नो होआ नाथु **कृपाला** ।।
रहरासि हमारी गुर गोपाला ।। (पृ. 886, म:5)

भ्रम भै मोह न माइआ जाल ।।
सुंन समाधि प्रभू **किरपाल** ।। (पृ. 889, म:5)

संतह संगु दीआ **किरपाल** ।।
संत सहाई भए दइआल ।। (पृ. 889, म:5)

सुणि करतार गोविंद गोपाल ।।
दीन दइआल सदा **किरपाल** ।। (पृ. 890, म:5)

भये दइआल **कृपाल** संत जन, तब इह बात बताई ।।
सरब धरम मानो तिह कीए, जिह प्रभ कीरति गाई ।।(पृ. 902, म:5)

गोबिंदा मेरे गोबिंदा, प्राण अधारा मेरे गोबिंदा ।।
कृपाला मेरे **कृपाला** दान दातारा मेरे **किरपाला** ।।(पृ. 924, म:5)

प्रिअ रंगि जागे नह छिद लागे **कृपालु** सद बखसिंदु जीउ।।
बिनवंति नानक हरि कंतु पाइआ सदा मनि भावंदु जीउ।।(पृ. 928)

अमृत बाणी सतिगुर पूरे की जिसु **किरपालु** होवै तिसु रिदै वसेहा।।
आवण जाणा तिसका कटीऐ सदा सदा सुखु होहा।। (पृ.-960-61)

जिस कै सुआमी वलि, निरभउ सो भई ।।
जिस नो तूं **किरपालु**, सचा सो थिआई ।। (पृ. 961, म:5)

होहु **किरपाल** सुआमी मेरे संतां संगी विहावे।।
तुधहु भुले सि जमि जमि मरदे तिन कदै न चुकनि हावे।।(पृ. 961)

करि किरपा **किरपाल** आपे बखसि लै ।।
सदा सदा जपी तेरा नामु सतिगुर पाई पै ।। (पृ. 961, म:5)

कलि महि एहो पुनु गोविंद गाहि ।।
सभसै नो **किरपालु** समालै साहि साहि ।। (पृ. 962, म:5)

दीन दइआल **कृपाल** दमोदर, भगति बछल भैहारी ।।
कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुमारी ।।(पृ. 971, म:5)

जीअ जंत्र करे प्रतिपाल ।। सदा सदा सेवहु **किरपाल** ।।(पृ. 987)

मनि तनि बसि रहे गोपाल ।।
दीन बांधव भगति वछल, सदा सदा कृपाल ।। (पृ. 988)

भइओ **कृपालु** ठाकुरु सेवक कउ, सवरे हलत पलाता ।।
धंनु सेवकु सफलु ओह आइआ, जिनि नानक खसमु पछाता ।।
(पृ. 1000, म:5)

जिस कउ होत **कृपाल** सुआमी ।।
सो जनु नानक पारगरामी ।। (पृ. 1005, म:5)

कृपाल दइआल गोपाल गोबिद, जो जपै तिस सीधि ।।
नवल नवतन चतुर सुंदर मनु नानक तिसु संगि बीधि ।।(पृ. 1006, म:5)

जितु को लाइओ तित ही लागा, तैसे करम कमाइओ ।।
जउ भइओ **कृपालु** ता साध संगु पाइआ, जन नानक ब्रहमु धिआइओ ।।
(पृ. 1017, म:5)

मन मेरे राम रउ नित नीति ।।
दइआल देव **कृपाल** गोबिंद सुनि संतना की रीति ।।(पृ. 1017, म:5)

मिलिओ तिसु सरब निधाना, प्रभि **कृपालि** जिसु दीवना ।।
सुखु नानक संतन की सेवा, चरण संत धोइ पीवना ।।(पृ. 1019, म:5)

जह देखा तह दीन दइआला ।। आइ न जाई प्रभु **किरपाला**।।(पृ. 1038)

भए **कृपाल** गुसाई मेरे ।। दरसनु पाइआ सतिगुर पूरे ।। (पृ. 1078, म:5)

पतित पावन दुख भै भंजनु ।।अहंकार निवारणु है भव खंडनु ।।
भगती तोखित दीन **कृपाला**, गुणे न कित ही है भिगा ।।(पृ. 1083)

दीन बिनउ सुनु दइआल ।।
पंच दास तीनि दोखी एक मनु अनाथ नाथ ।।
राखु हो **किरपाल** ।। (पृ. 1119, म:5)

दीन दइआल सदा **किरपाल** ।।
बिनसि गए सगले जंजाल ।। (पृ. 1149, म:5)

परतिपाल प्रभ **कृपाल** कवन गुन गनी ।।
अनिक रंग बहु तरंग सरब को धनी ।।(पृ. 1153, म: 5)

तिनि नामु पाइआ जिसु भइओ **कृपाल** ।।
साध संगति महि लखे गोपाल।। (पृ. 1156, म: 5)

तिसु बसंत जिस प्रभु **कृपाल** ।।
तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआलु ।। (पृ. 1180, म: 5)

राखि लोहु गोबिंद दइआल ।।तेरी सरणि पूरन **कृपाल** ।। (पृ. 1193, म:5)

जब गुण गाइ तब ही मनु त्रिपतै सांति वसै मनि आइ ।।
गुर **किरपाल** भए तब पाइआ, हरि चरणी चितु लाइ ।।(पृ. 1199)

हरि दरसन कउ हरि दरसन कउ कोटि कोटि तेतीस सिध
जती जोगी तट तीरथ परभवन करत रहत निराहारी ।।
तिन जन की सेवा थाइ पई जिन कउ **किरपाल** होवतु बनवारी ।।
(पृ.-1201,म:4)

कवन उपमा कउन बडाई, किआ गुन कहउ रिझाए ।।
होत **कृपाल** दीन दइआ प्रभ जन नानक दास दसाए ।।(पृ.-1205)

छोडि सिआनप बहु चतुराई, साधू सरणी जाइ पाइ ।।
जउ होइ **कृपालु** दीन दुख भंजन, जम ते होवै धरमराए ।।(पृ.-1208)

निकटि सुनउ अरु पेखउ नाही, भरमि भरमि दुख भरीआ ।।
होइ **कृपाल** गुर लाहि पारदो, मिलउ लाल मनु हरीआ ।।(पृ.-1209)

अब मोरो ठाकुर सिउ मनु मानां ।।
साध **कृपाल** दइआल भए है, इह छेदिओ दुसटु बिगाना ।।(पृ.-1210)

करहि अरदासि बहुतु बेनंती, निमख निमख सामारहि ।।
होहु **कृपाल** दीन दुख भंजन, हाथ देइ निसतारहि ।।(पृ.-1211)

खोजत खोजत भइओ बैरागी, फिरि आइओ देह गिरामा ।।
गुरि **कृपालि** सउदा इह जोरिओ, हथ चरिओ लाल अगामा ।।(पृ.-1211)

गुर मिलि ऐसे प्रभू धिआइआ ।।
भइओ **कृपालु** दइआलु दुख भंजनु लगै न ताती बाइआ ।।(पृ.-1212)

भइओ दइआलु **कृपालु** दुख हरता, संतन सिउ बनि आई ।।
सगल निधान घरै महि पाए, कहु नानक जोति समाई ।।(पृ.-1213)

तुम गंभीर धीर उपकारी, हम किआ बपुरे जंतरीआ ।।
गुर **कृपाल** नानक हरि मेलिओ, तउ मेरी सूखि सेजरीआ ।।(पृ.-1213)

प्रभ सिमरत दूख बिनासी ।।
भइओ **कृपालु** जीअ सुख दाता, होई सगल खलासी ।।(पृ. – 1214)

होहु **कृपाल** नामु देहु अपुना, बिनती एह कही ।।
आन बिउहार बिसरे प्रभु सिमरत, पाइओ लाभु सही ।। (पृ. – 1220)

राखि लेहु दास अपने कउ, सदा सदा **किरपाल** ।।
सुख निधान नानक प्रभु मेरा, साध संगि धन माल ।।(पृ. – 1222)

होहु **कृपाल** दीन दुख भंजन, तेरिआ संतह की रावार ।।
नानक दासु द रसु प्रभ जाचै, मन तन को आधार ।।(पृ. – 1223 – 24)

साधिक सिध सगल मुनि लोचहि बिरले लागै धिआनु ।।
जिसहि **कृपालु** होइ मेरा सुआमी, पूरन ता को कामु ।।(पृ. – 1226)

भये **कृपाल** दइआल गोबिंद, भइआ साधू संगु ।।
हरि चरन रासि नानक पाई, लगा प्रभ सिउ रंगु ।।(पृ. – 1226)

भइओ **कृपाल** दीन दुख भंजनु, परा पूरबला जोर ।।
नानक सरणि कृपा निधि सागर, बिनसिओ आन निहोर ।।(पृ. – 1228)

संतन कै चरन लागे।। काम क्रोध लोभ तिआगे।।
गुर गोपाल भये **कृपाल** लबधि अपनी पाई ।।(पृ. – 1230)

नह दूरि पूरि हजूरि संगे ।। सुंदर रसाल तू ।।
नह बरन बरन नह कुलह कुल ।। नानक प्रभ **किरपाल** तू ।।
(पृ. – 1231)

पिता **कृपाल** आगिआ इह दीनी, बारिकु मुखि मांगै सो देना ।।
नानक बारिकु दरसु प्रभ चाहै, मोहि ह्रिदै बसहि नित चरना ।।(पृ. – 1266)

घनिहर बरसि सगल जगु छाइआ ।।
भये **कृपाल** प्रीतम प्रभ मेरे, अनद मंगल सुख पाइआ ।।(पृ. – 1268)

मनु मोहि लीना चरन संगे, नाम रसि जन माते ।।
नानक प्रीतम **कृपाल** सदहूं, किनै कोटि मधे जाते ।।(पृ. – 1278)

भजु साध संगे एक रंगे, **कृपाल** गोबिंद दीना ।।
अनाथ नीच सरणाइ नानक, करि मइआ अपुना कीना ।।(पृ. – 1278)

तू जु दइआलु **कृपाल** कहीअतु हैं, अति भुज भइओ अपारला ।।
फेर दीआ देहुरा नामे कउ, पंडीअन कउ पिछवारला ।।(पृ. – 1292 – 93)

मन जापहु राम गुपाल।। हरि रतन जवेहर लाल ।।
हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल।। हरि हो हो **कृपाल** ।।(पृ. – 1296, महला 4)

सभ सिसटि धार हरि तुम **किरपाल**, करता सभु तू तू तू राम राम राम।।
जन नानको सरणागती देहु, गुरमती भजु राम राम राम ।।(पृ. – 1297)

अगम पदारथ लाल अमोला, भइओ परापति गुर चरनारै ।।
कहु नानक प्रभ भए **कृपाला**, मगन भए हीअरै दरसारै ।।(पृ. – 1302)

अनित बिउहार अचार विधिहीनत, मम मद मात कोप जरीआ ।।
करुण **कृपाल** गुपालु दीन बंध, नानक ऊधरु सरनि परीआ ।।(पृ. – 1303)

कृपाल दइआ मइआ धारि ।। नानक मागै नामु दानु ।। (पृ. – 1305)

प्रभ पूरन गुनतास ।।
कृपाल दइआल गुपाल नानक हरि रसना गुन गाइ ।।(पृ. – 1306)

हरि आपे होइ **कृपाल**, आपि लिव लावहिगे ।।
जनु नानकु सरनि दुआरि, हरि लाज रखावहिगे ।। (पृ. – 1321)

ताप पाप बिनसे खिन भीतरि, भये **कृपाल** गुसाई ।।
सासि सासि पारब्रह्मु अराधी, अपने सतिगुर कै बलि जाई ।।(पृ. – 1338)

गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ ।।
दीन दइआल भये **किरपाला**, अपना नामु आपि जपाइआ ।।(पृ. – 1341)

लोभ मोह सिउ गई विखोटि ।। गुरि **कृपालि** मोहि कीनी छोटि ।।
इह ठगवारी बहुतु घर गाले ।। हम गुरि राखि लीए किरपाले ।।(पृ. – 1347)

घटि घटि बसंत बासुदेवहु पारब्रह्म परमेसुरह ।।

जाचंति नानक **कृपाल** प्रसादुं, नह बिसरंति नह बिसरंति नाराइणह।।
नह समरथं नह सेवकं नह प्रीति परम पुरखोतमं ।।
तव प्रसादि सिमरते नामं, नानक **कृपाल** हरि हरि गुरं ।। (पृ.-1356)

दुखं भयंति सुखं भै भीतं त निरभयह ।।
थान बिहून बिश्राम नांमं, नानक **कृपाल** हरि हरि गुरह ।।(पृ.-1357)

गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ।।
जा कउ होहि **कृपाल** सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ।। (पृ.-1386,म:5)

धंनि धंनि ते धंनि जन, जिह **कृपालु** हरि हरि भयओ ।।
हरि गुरु नानकु जिन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिओ ।।
(पृ.-1386)

रे गुन हीन दीन माइआ क्रिम, सिमरि सुआमी एक घरी ।।
करु गहि **कृपाल** कृपानिधि, नानक काइ भरंम भरी ।।(पृ.-1387)

तिचरु मूलि न थुड़ींदो जिचरु आपि **कृपाल** ।।
सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि खरचि धनु मालु ।। (पृ.-1426)

***